Part II Paper IV (दशकुमारचरितम्) (दण्डी)

चतुर्थपत्र

(5) ~~विकल्पात्मक~~ खण्ड (क) अनिवार्य प्रश्न

प्रश्न :- दण्डिनः पदलालित्यम् के आलोक में दण्डी के गद्य-शैली की समीक्षा कीजिये या "दशकुमारचरितम् संस्कृत गद्य साहित्य की एक उच्चकोटि का गद्यकाव्य है" समीक्षा करें (60)

उत्तर :- महाकवि दण्डी संस्कृत गद्य साहित्य के एक महान् गद्यकार माने जाते हैं। दण्डी के जीवन के विषय में विशेष जानकारी नहीं है। अक्सर संस्कृत के कवियों ने अपना परिचय नहीं दिया है, अतः उनके विषय में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता है परन्तु कृतियों के बारे में उतना विवाद नहीं होता जितना जन्मादि के विषय में। महाकवि दण्डी की तीन रचनायें हैं- काव्यादर्श, अवन्तिसुन्दरीकथा तथा दशकुमारचरितम्। इसके समर्थन में शारंगधरपद्धति में इस तरह का श्लोक साक्ष्य के रूप में उपस्थित किया है-

त्रयोऽग्नयस्त्रयो वेदास्त्रयो देवास्त्रयो गुणाः।
त्रयो दण्डिप्रबन्धाश्च त्रिषु लोकेषु विश्रुताः॥

दण्डी का वास्तविक नाम क्या था, यह स्पष्ट नहीं है, किन्तु दशकुमारचरित के मंगलाचरण में बार-बार दण्ड शब्द के प्रयोग को देखकर किसी विद्वान् ने उन्हें दण्डी ऐसा नामकरण कर दिया -

ब्रह्माण्डच्छत्रदण्डः शतधृतिभवनाम्भोरुहो नालदण्डः
क्षोणीनौकूपदण्डः क्षरदमरसरित्पट्टिकाकेतुदण्डः।
ज्योतिश्चक्राक्षदण्डस्त्रिभुवनविजयस्तम्भदण्डोऽङ्घ्रिदण्डः
श्रेयस्त्रैविक्रमस्ते वितरतु विबुधद्वेषिणां कालदण्डः॥

इसके आधार पर कहा जा सकता है कि दण्डी कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण थे और प्रकाण्ड विद्वान् थे। दशकुमारचरित दण्डी की अनुपम रचना है। दशकुमारचरित दो पीठिकाओं में विभक्त है- पूर्वपीठिका तथा उत्तरपीठिका तथा आठ उच्छ्-वासों में यह विभक्त है। इसमें दश-कुमारों की उत्पत्ति का वर्णन यथार्थ रूप में हुआ है। पूर्वपीठिका के प्रथमोच्छ्वास में पुष्पपुरी में राजहंस तथा उसकी पत्नी वसुमती का वर्णन है।

अस्ति समस्तनगरीनिकषाय- - - - -

- - - - - - मगध देशशेखरीभूता पुष्पपुरी नाम नगरी

राजहंस के राजवाहन नाम का एक पुत्ररत्न है, वह सौन्दर्य में कामदेव के समान सुन्दर है। अब वह जययात्रा के लिए तैयार है। यमक अलंकार के माध्यम से अपनी पदलालित्य का परिचय दिया

कुसुमशरासनसुषमाराममयपौरुषारुषा-
भस्मीकृतारातिरयोपहसितसमीरणारणा-
भियानेन ... ताभ्युदयाशंसं राजानमकार्षुः।"

वास्तव में दण्डी सरल सुगम एवं मनोरम गद्य शैली के निर्माता हैं। दण्डी की शैली प्रसादगुण शैली है। शब्द और अर्थ उनके इशारे पर चलते हैं, फलतः शब्द एवं पद प्रयोग से वर्ण्य विषय लालित्यपूर्ण हो जाता है। रानी वसुमती का वर्णन ललित पदों में हुआ है-

"तस्य वसुमती नाम सुमती लीलावती
कुलशेखरमणिरमणी बभूव।"

उनके वाक्य प्रायः लघु, भावानुरूप और ललित होते हैं। शब्दों का यह सुन्दर प्रयोग →

PANINI CLASSES

लालित्य और रसाभिव्यक्ति में पूर्ण सहयोग प्रदान करता है। दण्डी का भाषा शैली पर असामान्य अधिकार है। दण्डी सदा शब्द आडम्बर से दूर रहता है। अतः उसकी वाक्य-योजना प्रायः सुन्दर और स्वभाविक होती है। सूर्योदय के वर्णन में कवि ने उत्प्रेक्षा के माध्यम से गद्य शैली का परिचय दिया है-

"चिन्तयत्येव मयि महार्णवोन्मग्नमार्तण्ड-
तुरंगमश्वाससरयावधूतेव न्यावर्तत त्रियामा।
समुद्रगर्भवास जडीकृत एव मन्दः प्रतापो-
दिवस[illegible]कारासीत्।"

दण्डी की शैली [illegible] विषयानुरूप परिवर्तनशील है। कथाधारा को निरन्तर धारावाहिक रूप में विकसित करने के लिये व्यास शैली का प्रयोग [illegible] शैली को, चूर्णक शैली [illegible] भी जाना जाता है। इस प्रकार की शैली में वाक्य अत्यन्त छोटे-छोटे होते [illegible]

"[illegible] पिबति नितम्बभागः।"

न केवल चूर्णक शैली अपितु मुक्तक शैली का भी प्रयोग करते है। मुक्तक शैली में लम्बे-लम्बे समासों से युक्त दीर्घ वाक्य होते है। पञ्चमोच्छ्वास के प्रारंभ में वसंत ऋतु के वर्णन में इसी तरह के लम्बे-2 वाक्यों का प्रयोग करते है-

अथ मीनकेतनसेनानायकेन मलयगिरि-
महीरुहनिरन्तरवासिभुजंगमभुक्तावशिष्टे-
नेव - - - - - - - वसन्तसमयः
समाजगाम।"

आत्मदीपो भव
PANINI CLASSES
विद्ययाऽमृतमश्नुते

दण्डी के गद्य में शाश्वत सत्य को उद्घाटित करने वाली अनेक सूक्तियाँ उपलब्ध होते हैं। जैसे - जीवन दो-चार दिनों का है -

"जीवितं हि नाम जन्मतो चतुःपञ्चान्यहानि।"

"स्वदेशो देशान्तरमिति नेयं गणना विदग्धस्य।"

अर्थात् "बुद्धिमान् पुरुष देश विदेश की गणना नहीं करते हैं" इस संसार में जो निरीह पुरुष हैं, लक्ष्मी उनका आश्रय नहीं करती -

"इहलोके नहि निरीहं देहिनं श्रियः संश्रयन्ते।"

इन्हीं समस्त विशेषताओं को लक्षित करके विश्वेन्द्रनाथ शास्त्री ने लिखा है "पदार्थों की [illegible] की अभिव्यक्ति, कोमल [illegible] की [illegible]यता, विचार वैशिष्ट्य गद्यकाव्य की विशेषताएँ हैं - दशकुमारचरित इन सभी विशेषताओं पर खरे उतरते हैं, अतः यह निश्चय ही संस्कृत गद्य साहित्य का एक उच्चकोटि का गद्यकाव्य है। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि दण्डी के गद्यकाव्य में शब्दयोजना सौष्ठव, अनुप्रास का लालित्य, चमत्कारपूर्ण पदावली विद्यमान है। इसी ललितपदावली को देखकर आलोचकों के मुख से यह उक्ति अनायास निकल पड़ी -

"दण्डिनः पदलालित्यम्।"

PANINI CLASSES